रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष—4 | अंक 41 | जुलाई 2010 | मूल्यः 5रू.

भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राईफेड): एक परिचय

आदिवासी समुदाय के लोग अपनी रोजी—रोटी कमाने के लिए खेती या मजदूरी करते हैं और जंगलों से कुछ बिन कर उसे हाट बाजारों में बेचते हैं। इसके अलावा बहुत से लोग अपना काम—धंधा कर पैसे कमाते हैं। कई लोग कपड़े सिलते हैं, कशीदा करते हैं, बाँस के तीर कामठी बनाते हैं, आदिवासी कलात्मक चीजें बनाते हैं, मोती के गलसन, चोमली और कई तरह की चीजें बनाते हैं। ज्यादातर ऐसा होता है कि साधनों और जानकारी की कमी के कारण अपनी बनाई चीजों को बाजार तक नहीं पहुँचा पाते और बाजार में पहुँचाने पर भी उन्हें अपने काम की सही कीमत नहीं मिलती है। एक कारण यह भी है कि वह उसकी ठीक कीमत नहीं लगा पाते। इन सभी कारणों से वे आगे नहीं बढ़ पाते हैं और न अपने कला—कौशल का उपयोग कर कोई रोजगार चला पाते हैं। भारत सरकार ने आदिवासियों के लिए विशेषतौर पर एक ऐसी संस्था बनाई है जिसका नाम 'भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ' है। अंग्रेजी में इसका छोटा नाम 'ट्राईफेड' है। यह संस्था आदिवासियों के आर्थिक विकास के लिए बनाई गई है। यह संस्था आदिवासियों की कलाओं को लोगों तक पहुँचाती है और उनकी बनाई हुई चीजों की सही कीमत दिलवाने की व्यवस्था करती है ताकि उनकी आय बढ़ सके और वे अपनी आर्थिक स्थिति सुधार कर सकें। अभी भी इस संस्था और इसके कामों की जानकारी ज्यादातर आदिवासियों को नहीं है। इस कारण वे इसका पूरा लाभ नहीं ले पा रहें हैं। ट्राईफेड भी अभी तक ज्यादा से ज्यादा आदिवासियों तक नहीं पहुँच पाया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान 'बरली की दुनिया' के इस अंक में ट्राईफेड का एक परिचय दे रहा है ताकि ज्यादा से ज्यादा आदिवासी इसका लाभ उठा सकें और जिस उद्देश्य से यह संस्था बनाई गई है, वह उद्देश्य पूरा हो सके। इस अंक में दी जाने वाली जानकारी ट्राईफेड के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री जे. एस. शेखावत द्वारा दी गई है।

केन्द्रीय जनजातीय कार्यमंत्री श्री कांतिलाल भूरिया व ट्राईफेड की प्रबंध निदेशिका श्रीमती स्नेहलता कुमार संस्थान की निदेशिका को ट्राईफेड की जानकारी देते हुए

ट्राईफेड की शुरूआत

ट्राईफेड की स्थापना भारत सरकार के आदिवासी मंत्रालय द्वारा सन् 1987 में की गई थी। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में

है और क्षेत्रीय कार्यालय सभी राज्यों में हैं। मध्यप्रदेश में इसका कार्यालय भोपाल में है।

ट्राईफेड के काम

आदिवासियों के हाथ से बनी कलात्मक चीजों को लोगों तक पहुँचाने के लिए ट्राईफेड ने भारत के कई जगहों पर 23 बिक्री केन्द्र खोले हैं। इन बिक्री केन्द्रों पर आदिवासियों द्वारा बनाया सामान बेचा जाता है। इन बिक्री केन्द्रों पर आदिवासियों द्वारा बनाई गई कला और कारीगरी के नमूने रखे जाते हैं जो कि भारत भर के आदिवासियों द्वारा बनाए जाते हैं। यहाँ पर रखे जाने वाली सभी चीजें प्राकृतिक कच्चे माल से बनाई जाती है। इन चीजों का दाम भी सही रखा जाता है। मुख्य रूप से यहाँ पर आठ तरह की चीजें बेचने के लिए रखी जा रही है, जिनमें आदिवासी कलाकारों द्वारा बनाए गए कपड़े और कशीदाकारी, धातु से बनी कलाकृतियाँ, आदिवासी आभूषण, बाँस और लकड़ी से बनी चीजें, पत्थर व मिट्टी की मूर्तियां, आदिवासी भिति चित्र, उपहार देने योग्य सामान व प्राकृतिक खाने–पीने की चीजें शामिल हैं। इन सब चीजों की बिक्री 'ट्राइब्स इंडिया' के बिक्री केन्द्रों द्वारा की जाती है। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भील, भीलाला, मुडिया, गड़वा, झारा और गोंड़ जाति के आदिवासी ये वस्तुएं तैयार करते हैं।

मेलों का आयोजन

ट्राईफेड समय–समय पर आदिवासी हस्तशिल्प मेलों और आदिशिल्प प्रदर्शनियों का आयोजन करता रहता है। इन मेलों के आयोजन से आदिवासियों को अपनी कला प्रदर्शन करने के साथ–साथ अपने हाथ से बनाई सामान को बेचने का अवसर मिलता है। लोगों के सामने अपनी कला–कौशल को दिखाने के साथ ही ट्राईफेड को बिक्री केन्द्रों के लिए नियमित रूप से वस्तुएँ मिलती रहती हैं। वर्ष 2009–2010 में ट्राईफेड द्वारा सात आदिवासी हस्तशिल्प मेलों का आयोजन किया गया। इन मेलों में 14 राज्यों के 304 आदिवासी कारीगरों ने भाग लिया और अपनी बनाई हुई वस्तुओं को बेचा। इसी तरह ट्राईफेड ने आदिशिल्प नाम की प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया। 2009–2010 में ऐसी प्रदर्शनियों का आयोजन नई दिल्ली, बंगलोर, हैदराबाद, भोपाल, शिमला, अमृतसर, जालन्धर और लखनऊ में किया गया। इन प्रदर्शनियों में विभिन्न राज्यों के 576 आदिवासी कारीगरों ने भाग लिया और हाथ की बनी वस्तुओं की बिक्री की। इन प्रदर्शनियों में कुल 162.57 लाख रूपए की बिक्री हुई।

प्रशिक्षण

ट्राईफेड समय–समय पर आदिवासियों की क्षमता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण भी आयोजित करता है। इन प्रशिक्षणों का उद्देश्य आदिवासी कलाकारों की कला में निखार लाना है। ट्राईफेड न

आदिवासियों को ऐसे कई प्रशिक्षण दिए हैं जिसके बाद उन्होंने अपने काम करने के तरीके को और बेहतर बनाया और उनकी आय भी पहले से बढ़ गई। ट्राईफेड ने महुआ, गोंद व शहद इक्ट्ठा करने वालों, लाख उगाने वालों, पत्तों के दोने पत्तल बनाने वालों तथा हस्तकला शिल्पियों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की जिसकी जानकारी नीचे दी जा रही है।

1. महुआ फूल इक्ट्ठा करने वालों का प्रशिक्षण

आदिवासी क्षेत्रों में महुए के फूल बहुत अधिक होते है। आदिवासी लोग महुए के फूलों को जंगलों से बिनकर बाजार में बेचते हैं। इससे ताड़ी व दारू भी बनाते हैं। यह देखा गया है कि उन्हें इन फूलों को इस तरह से बिनना, सुखाना और भंडारण करना नहीं आता जिससे ज्यादा आमदनी कर पाएं। इसलिए फूल बेचकर ज्यादा फायदा नहीं होता। इसलिए ट्राईफेड महुए के फूल इक्ट्ठा करने वालों को प्रशिक्षण देता हैं ताकि वे सही तरीके से इन्हें बिने, सुखाए व उचित भंडारण करें और उससे और चीजें बनाने के तरीकों में भी सुधार कर सकें, जिससे उनकी बिक्री अच्छी हो। महुआ इक्ट्ठा करने वालों के लिए ट्राईफेड वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों के सहयोग से प्रशिक्षण का आयोजन करता है। सन् 2009–2010 के दौरान मध्यप्रदेश के शहडौल जिले के 100 आदिवासियों को प्रशिक्षण दिया गया। यहाँ महुओं के फूलों को इक्ट्ठा करने व भंडारन करने के तरीके सिखाए गए। यह परिणाम हुआ कि कई स्वयं सहायता समितियों को इससे अच्छी आय हुई और सभी को 6 रूपए प्रति किलो की दर से बोनस भी मिला।

2. गोंद इक्ट्ठा करने वालों का प्रशिक्षण

कुल्लु गोंद इक्ट्ठा कर उसको बाजार में बेचने का काम कई आदिवासी समुदायों का मुख्य धंधा है। पेड़ों को नुकसान पहुँचाए बिना बहुत अधिक मात्रा में गोंद इक्ट्ठा कर सकते हैं। इस उद्देश्य से ट्राईफेड ने पिछले वर्षों में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं आन्ध्रप्रदेश के लगभग 10,000 गोंद इक्ट्ठा करने वालों आदिवासियों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया। इसके बाद गोंद को वैज्ञानिक रूप से इक्ट्ठा करने के लिए उन्हें आवश्यक साधन भी दिए। इसका परिणाम यह हुआ कि गोंद से आदिवासियों की आमदनी पहले से बढ़ रहीं हैं और वह गोंद भी अधिक मात्रा में इक्ट्ठा करते हैं। प्रशिक्षण के पहले उन्हें 75 से 100 रूपए प्रति किलो गोंद के लिए मिल रहे थे और उसके बाद 140.175 रूपए प्रति किलो मिलने लगे हैं।

3. शहद इक्ट्ठा करने वालों का प्रशिक्षण

बहुत सारे राज्यों में आदिवासी जंगल से शहद इक्ट्ठा कर बेचते हैं। लेकिन पुराने और अवैज्ञानिक तरीके से शहद इक्ट्ठा करने के कारण मधुमक्खियों को तो नुकसान होता है साथ ही जंगल के पर्यावरण पर भी असर होता है और शहद की गुणवत्ता भी खराब हो जाती है। आदिवासी समूहों के लिए जंगल में से शहद इक्ट्ठा करना ही आमदनी का एक मुख्य साधन है। ट्राईफेड वैज्ञानिक रूप से शहद इक्ट्ठा करने का प्रशिक्षण आयोजित करता है जिसमें आदिवासियों को जंगल के शहद को इक्ट्ठा करने का वैज्ञानिक प्रशिक्षण देता है और इसमें उपयोग होने वाले जरूरी साधन भी उन्हें दिए जाते हैं। वर्ष 2009–10 के दौरान ट्राईफेड ने असम, मेघालय, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम, उड़ीसा, महाराष्ट्र, केरल, राजस्थान एवं झारखंड राज्यों के 2576 आदिवासियों को शहद इक्ट्ठा करने का वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया और साथ ही जरूरी साधन भी दिए। इस प्रशिक्षण के बाद इक्ट्ठा किए गए शहद को ट्राईफेड के सदस्यों द्वारा एवं अन्य बहुउद्देशीय सहकारी संस्थानों द्वारा ऊँची कीमतों पर खरीदा जा रहा है।

4. लाख पैदा करने वालों को प्रशिक्षण

लाख एक ऐसा वन उत्पाद है जो कि पलाश, बेर और कुसुम जैसे पेड़ों पर उगाया जाता है। लाख की खेती आदिवासी लोगों की आय का एक अच्छा साधन है। झारखंड, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा के कुछ भागों में लाख की खेती मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में बड़े स्तर पर की जाती है। लाख का उपयोग सौंदर्य प्रसाधनों को बनाने, दवाइयां बनाने, मिठाई में, रसायन एवं पेंटिंग उद्योग में, रंगाई में एवं अन्य उद्योगों में किया जाता है। सन् 2009–10 में ट्राईफेड ने उड़ीसा, मध्यप्रदेश और झारखंड में लाख उगाने वाले 1823 लोगों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया। साथ ही उनको लाख की खेती के लिए जरूरी उपकरण और बीज भी दिए गए।

5. दोने पत्तल बनाने का प्रशिक्षण

साल/सियाली पेड़ों के पत्तों के कप और प्लेट (दोने पत्तल) बनाना कई आदिवासी समुदाय के लोगों की आय का मुख्य साधन है। ट्राईफेड ने दोने पत्तल बनाने की मशीनों के विकास का काम शुरू किया। यह काम आई.आई.टी. खड़गपुर के सहयोग से किया जा रहा है। इस मशीन को बायोमास ईंधन से चलाया जाता है जो कि खेत के बचे–खुचे हरे कचरे और लकड़ियों से चलता है। महिलाएँ भी इसे आसानी से चला सकती हैं। स्वयं सहायता समूहों की उन महिलाओं को मशीने भी दी गई जिन्हें पहले प्रशिक्षण दिया गया था। सन् 2010 में उड़ीसा व झारखंड के 690 आदिवासियों को पत्तों के दोने–पत्तल बनाने का प्रशिक्षण दिया गया और दोने–पत्तल बनाने वाले मशीनें भी दी गई।

6.हस्तकला शिल्पियों के लिए प्रशिक्षण

हस्तकला शिल्पियों के लिए ट्राईफेड तीन स्तरों पर प्रशिक्षण का आयोजन करता है।

1. प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण
2. उच्च स्तरीय प्रशिक्षण
3. डिजाईन सुधार कार्यशाला

प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण में आदिवासी लोगों को हाथ से बनने वाली कलाकृतियों को बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है जबकि उच्च स्तरीय प्रशिक्षण में उन आदिवासियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है जिन्होंने प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण में अच्छी तरह सीखा है। डिजाईन सुधार कार्यशाला में हाथ से बनी कलाकृतियों की मांग की पूर्ति करने वालों शिल्पियों को चुना जाता है और उन्हें उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं को और बेहतर बनाने का तरीका सिखाया जाता है।

क. प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण – सन् 2010 में ट्राईफेड ने 16 प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, त्रिपुरा, मणिपुर, मध्यप्रदेश, झारखंड, राजस्थान, गुजरात, कर्णाटक, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश जैसे 11 राज्यों के 320 हस्तशिल्पियों ने इनमें भाग लिया। प्रशिक्षण में बांस और बेंत हस्तकला, कुम्हारी, बाग प्रिंट छपाई, मूर्त्तिकला, कशीदाकारी, पत्थरों पर नक्काशी, चटाई बनाने की कला आदि विभिन्न हस्तकलाओं को बनाने और बेचने का प्रशिक्षण दिया गया।

ख. उच्च स्तरीय प्रशिक्षण – पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ और कर्णाटक के 75 हस्तशिल्पियों को 5 उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिए गए। इस प्रशिक्षण में उन्हें सोने–चाँदी और अन्य धातुओं से जेवर बनाने, मूर्त्तिकला, चर्म कला, कशीदाकारी जैसी विभिन्न हस्तकलाओं का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य आदिवासी हस्तशिल्पियों को सामानों की पूर्ति करने वालों की सूची मे सम्मिलित करने का था।

ग. डिजाईन सुधार कार्यशाला – डिजाईन सुधार कार्यशालाओं का आयोजन हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर राज्यों में किया गया। कार्यशालाओं में पाश्मीना एवं ऊनी

हस्तकलाओं में सुधार करने का प्रशिक्षण दिया गया। इनमें 163 आदिवासी हस्तशिल्पियों ने पश्चिम बंगाल की काथा कशीदा, राजस्थान की पेचवर्क (कपड़ों के टुकड़ों से बनाया हुआ) और कई तरह के टांकें, मणिपुर का लोंगपी कुम्हारी, उड़ीसा का खजूरी के पत्तों पर चित्रकला, उत्तराखंड का हाथ से बनी शाल और जम्मू व कश्मीर का पश्मीना जैसी हाथ से बनी वस्तुओं में कलात्मक सुधार किया। जिससे इनकी कलाओं को अच्छी पहचान मिली।

बिक्री में बढ़ोतरी

ट्राइब्स इंडिया' द्वारा बेचे गए सामानों की बिक्री वर्ष 2005–2006 में कुल 162.56 लाख रूपये थी। वर्ष 2009–2010 में बढ़कर 688.20 लाख रूपये हो गयी है। वर्ष 2009–2010 के दौरान बिक्री के लिए 196 नई आदिवासी कला एवं हाथ की बनी वस्तुओं को चुना गया।

मध्यप्रदेश में ट्राईफेड की अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क कर सकते है।

क्षेत्रीय कार्यालय ट्राईफेड, 35, श्यामला हिल्स, राजीवगॉधी भवन–2, भोपाल –462002

फोनः– 0755–2660348

संस्थान के समाचार

विश्व जनसंख्या दिवस पर कार्यक्रम

जनसंख्या सप्ताह के अवसर पर बरली संस्थान में 99 वें प्रशिक्षण सत्र की 102 प्रशिक्षणार्थियों को फैमिली प्लॉनिंग एसोसिएशन इंदौर शाखा के कार्यक्रम अधिकारी श्री राजेन्द्र व्यास ने 10 जुलाई 2010 को बढ़ती हुई जनसंख्या के बारे में जानकारी दी कि हमारे देश की जनसंख्या जितनी तेजी से बढ़ रही है उतनी ही तेजी से हमारे साधन कम होते जा रहे हैं। इसी तरह जनसंख्या बढ़ती रही तो एक दिन ऐसा आएगा कि जमीन पर लोग ही लोग हर जगह दिखेंगे और खेती और जंगल के लिए जमीन नहीं बचेगी जिससे हमें जीवन के लिए जरूरी चीजें भी नहीं मिलेगी। जनसंख्या को कम करना हो तो परिवार छोटा रखना होगा। परिवार जितना छोटा होगा बच्चों की देखभाल अच्छी होगी। उन्हें सही खान–पान व शिक्षा मिलेगी। महिलाओं को भी उतना ही अपना ध्यान स्वयं रखना होगा जब वह स्वस्थ होगी तो ही वह परिवार का ध्यान रख पाएगी। इसलिए परिवार नियोजन को अपनाना बहुत जरूरी हैं। एक परिवार में कितने बच्चे हो यह निर्णय पति–पत्नी दोनों को मिलकर लेना चाहिए। अपने बच्चों के लिए निर्णय लेते समय पति–पत्नि को कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए। जैसे अपने पास जितने भी साधन है उससे वे अपने बच्चों को रोटी, कपड़ा और मकान के साथ अच्छी शिक्षा दे। उसके बाद ही उन्हें तय करना चाहिए कि उनके कितने बच्चे होने चाहिए। जनसंख्या को कम करने के लिए शादी सही उम्र में होना चाहिए। शादी के लिए लड़की कम से कम 18 साल की हो और 20 साल से पहले किसी महिला को माँ नहीं बनना चाहिए क्योंकि 20 साल से पहले महिला का शरीर बच्चे को जन्म देने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं होता। अगर लड़कियों की शादी जल्दी होती हैं तो वह अपना और अपने बच्चों का सही देखभाल नहीं कर पाती। उसके बच्चे कमजोर और ज्यादा बीमार रहते हैं और वह भी कमजोर हो जाती है। इसी कारण मातृ व शिशु मृत्यु दर कम नहीं हो पाती।

सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में रजत जयंती कार्यक्रम के अन्तर्गत 19 से 21 जुलाई तक तीन दिवसीय सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन अमेरिका स्थित संस्था केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन के सौजन्य से की गई। इसमें मध्यप्रदेश के जिला खरगोन के 8 गाँवों की 23 पूर्व प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। संस्थान की निदेशिका

डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन ने 25 वर्षों में संस्थान द्वारा कार्यों एवं प्रगति की जानकारी देते हुए कहा "संस्थान में लगभग 6000 महिलाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। यह संस्थान बहाई शिक्षाओं से प्रेरित है। रजत जयंती समारोह के अंर्तगत हर महीने पूर्व प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण दिया जाता है क्योंकि अभी भी गाँव में बहुत से लोग गलत मान्यताओं और अंधविश्वास को मानते है। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना हैं क्योंकि मध्यप्रदेश में कुपोषण, खून की कमी, मातृ और शिशु मृत्यु दर बहुत ज्यादा है। इसलिए

संस्थान में उन्हें समुदाय में सेवा देने के लिए तैयार किया जाता हैं ताकि स्वयं, परिवार और गाँव का विकास कर सकें।" मुख्य अतिथि उद्बोधन में डॉ. (श्रीमती) सविता इनामदार शिशु रोग विशेषज्ञ ने कहा "संस्थान के प्रशिक्षण से महिलाओं को स्वास्थ्य की जानकारी मिली, व्यक्तित्व विकास हुआ, आत्मविश्वास बढ़ा, क्षमताओं और गुणों के विकास के साथ–साथ उनकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ गई।"उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संदेश दिया कि इसे अपने परिवार, आस–पास और समुदाय में दूसरों को भी देना जरूरी है। अध्यक्षीय उद्बोधन में वरिष्ठ पत्रकार श्री अतुल लागु ने कहा "मैं बरली संस्थान को नमन करता हूँ क्योंकि यहाँ पर महिलाओं को सशक्त किया जा रहा है। इस सामुदायिक स्वास्थ्य के प्रशिक्षण से वह स्वयं, परिवार, समुदाय और गाँव को स्वस्थ रखेगी।" इस अवसर पर पूर्व प्रशिक्षणार्थियों में से कु. छन्ना चौहान ने कहा "स्वस्थ जीवन

के लिए संतुलित पोषक आहार जरूरी है।" सोना जमरे ने कहा "हमें साफ खाना व पानी पीना चाहिए। घर व घर के आसपास की तथा गाँव की साफ–सफाई रखनी चाहिए।" कु. संतरा मोरे ने कहा "बुखार आने पर थर्मामीटर से शरीर का तापमान देखना चाहिए। तेज बुखार आने पर डॉक्टर के पास जाना चाहिए और ठंडे पानी की पट्टियाँ रखनी चाहिए।" कु. रेखा किराड़े ने कहा "जब मैं संस्थान में प्रशिक्षण लेने आई थी तब मैं निरक्षर थी लेकिन प्रशिक्षण के बाद मैंने गाँव जाकर पाँचवी की परीक्षा पास की और अभी मेरी पढ़ाई जारी है।" कु. सुशीला सोलंकी ने जीवन रक्षक घोल बनाने का तरीका बताया। कु. सुरमी चौहान ने प्राथमिक चिकित्सा के बारे में बताया। कु. मीनाक्षी वास्कले ने परिवार नियोजन के बारे में बताया। कु. उमा भवरे ने कहा "हमें बीमार, दु:खी, बड़े–बूढ़े और जरूरतमंदों की सेवा करनी चाहिए।" कु. शारदा बड़ोले ने कहा "हमें अपने समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य, साक्षरता, व्यक्तित्व विकास और नैतिक शिक्षा देना चाहिए।" ग्वालियर के गाँव सुसेरा से आए श्री पातीराम ने कहा "मेरी बहन और उसकी तीन सहेलियाँ 2006 में संस्थान में प्रशिक्षण लेने आई थी उस समय वह निरक्षर थी लेकिन प्रशिक्षण के बाद उनमें बहुत बदलाव आया। उनमें से एक ने 12 वी पास की, एक टीचर है और एक सिलाई का काम करके आत्मनिर्भर बनी है। वे सभी अपने समुदाय में सेवा दे रही है।" तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान कई महत्वपूर्ण विषयों जैसे स्वास्थ्य की परिभाषा, जलने से होने वाली दुर्घटनाओं का बचाव और इलाज, दूषित पानी से होने वाली बीमारियों के बचाव और इलाज, एच.आई.वी./एड्स के कारण, बचाव व इलाज, परिवार नियोजन, प्राथमिक चिकित्सा, मातृ व शिशु स्वास्थ्य, स्वास्थ्य और साफ–सफाई, स्वस्थ व संतुलित पोषक आहार, समुदाय की सेवा और लिंग समानता पर डॉ. रेणु तनेजा, डॉ. सीमा विजयवर्गीय, डॉ. कुलदीप विरानी, डॉ. राहिल निधान और श्रीमती जासमिन बीजू मैथ्यू ने प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर सभी प्रशिक्षणार्थियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण पत्र भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम

अधिकारी श्रीमती ढेडी बागदरे ने किया और आभार प्रदर्शन प्रशिक्षिका श्रीमती तारू जमरे ने किया।

स्वयं सेवा के अनुभव

♦ जर्मनी से आए श्री फिलिप संस्थान में पाँच दिनों तक रहें। अपने अनुभव में उन्होंने कहा "यहाँ पर इतना अच्छा समय बिताने के लिए बहुत धन्यवाद। यहाँ पर सेवा देने में मुझे बहुत आनंद आया। जिम्मी और जनक के साथ बात करना बहुत अच्छा लगा। मेरी आप सब से दोबारा

जर्मनी के श्री फिलिप

मिलने की इच्छा है। भविष्य के लिए बहुत शुभकामनाएँ।"

♦ऑस्ट्रेलिया से श्रीमती मारिन्नी अपने बेटे कारलोस के साथ सेवा देने आई। उन्होंने संस्थान में चल रही प्रशिक्षण

निदेशिका श्रीमती मारिन्नी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

गतिविधियों को देखने के बाद प्रशिक्षिकाओं और सहयोगियों को पढ़ाने के तरीके को और भी बेहतर बनाने का प्रशिक्षण दिया। साथ ही बाटिक और ब्लॉक प्रिटिंग के काम में भी सहयोग दिया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रार्थनाएँ भी सिखाईं। जाते समय उन्होंने कहा, "मुझे यहाँ पर सेवा का मौका देने के लिए धन्यवाद। यहाँ के स्टाफ बहुत अच्छे हैं और लड़कियाँ पवित्र हृदय की हैं। सभी के उद्देश्य एक हैं।" कारलोस ने कहा, "यहाँ का समुदाय बहुत अच्छा है और संस्थान का माहौल बिल्कुल परिवार जैसा है। मुझे भारत से बहुत प्रेम है। मै वापस जरूर आऊंगा।"

संस्थान में आए देश–विदेश से मेहमान

♦अमेरिका स्थित केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन से श्री नवीन गोयल अपने परिवार के साथ 7 जुलाई को संस्थान देखने आए। उन्होंने संस्थान में चल रहे सभी गतिविधियों को देखा और समझा। उन्होंने यहाँ के स्टाफ और प्रशिक्षणार्थियों से

केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन से श्री नवीन गोयल अपने परिवार के साथ

भी बातचीत की। उन्होंने कहा, "यहाँ के साफ–सुथरे वातावरण का देखकर मै बहुत प्रभावित हुआ। आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं को व्यवसायिक प्रशिक्षण देने का तरीका काफी अच्छा है ताकि वे उनके गाँव में अच्छा काम कर सकें। आप ऐसा ही अच्छा काम करते रहें।"

♦फादर रापी पुथोकरण 11 जुलाई को संस्थान में आए। उन्होंने कहा "आपके कार्य बहुत ही रचनात्मक है और आप बहुत प्रेरणादायक काम कर रहें हैं।" सतप्रकाशन संचार केन्द्र के निदेशक फादर जी. ओ. जॉर्ज ने कहा, "मानव कल्याण के

फादर रापी पुथोकरण और फादर जी. ओ. जॉर्ज

लिए आपके द्वारा किया गया काम बहुत आध्यात्मिक है आज के सभी धर्मो के लिए उदाहरण है।"

♦छत्तीसगढ़ के कोड़बा जिला के पब्लिक ट्रस्ट के प्रबंधक श्री एन. पी. मनछलवार 17 जुलाई को संस्थान आए। उन्होंने कहा, "गरीबों के लिए संस्थान बहुत उपयोगी है। मै संस्थान के विकास के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।"

♦इंदौर के डेली कॉलेज से 17 जुलाई को कक्षा 7वीं और 8वीं के 16 बच्चों का एक समूह संस्थान में आया। बच्चों ने बहुत उत्साह से सभी स्टाफ और प्रशिक्षणार्थियों से बात की और संस्थान के बारें में पूरी जानकारी ली। उन्हें संस्थान का वातावरण और प्रशिक्षण का तरीका बहुत पसंद आया।

♦देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के स्टाफ एकेडमिक कॉलेज से 26 प्रोफेसरों का समूह 10 जुलाई को संस्थान देखने आया। उनमें से आए सुश्री श्रद्धा मित्तल ने कहा, "महिला सशक्तिकरण और विकास का जीवंत उदाहरण और बहुत अच्छा प्रयास है। सभी संसाधनों और ऊर्जा को बचाने का तरीका बहुत प्रेरणादायी है।" डॉ. मुजाहिदा सय्यद ने कहा, "आपके प्रयास बहुत सराहनीय है।" बी.एस. बघेल ने कहा, "सोलर कुकर से भोजन बनाना बहुत अच्छा लगा।" डॉ. साधना डामोर ने कहा "यहाँ की कार्यप्रणाली प्रेरणा लेने वाली है। यह संस्था बहुत ही अच्छा सामाजिक उत्कर्ष में कार्य कर रही है। श्री के.के. तिवारी ने कहा, "बहुत अच्छी संस्था है जो निरक्षर लड़कियों की सहायता करती है।" डॉ.अशोक गर्ग ने कहा, "संसार का वह

सर्वश्रेष्ठ कार्य जो ईश्वर को अत्यधिक प्रिय है, यह कार्य उस कार्य में से एक है।" डॉ.एच.एस. बग्गा ने कहा, "सौर ऊर्जा का सुंदर उपयोग परम्परागत खेती कार्य, व सबसे महत्वपूर्ण ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना निःसंदेह प्रशंसनीय व महान कार्य है।"

◆डी. फार्मा गोवा की प्रबंध निदेशक श्रीमती मारिया मेन्जिज़ ने 16 जुलाई को संस्थान देखने के बाद कहा, "आदिवासी स्तंभों 'बरली' को आदर्श उदाहरण के रूप में शिक्षित करने का प्रयास बहुत अच्छा है। आपका हर प्रयास पर्यावरण और

जनक पलटा मगिलिगन और मारिया मेन्जिज़

ऊर्जा बचाने की ओर शक्तिशाली सूचक है। जनक और जिम्मी आपको अपने जीवन के प्रयासों को इतने बढ़िया परियोजना में लगाने के लिए ईश्वर का आर्शीवाद आपको मिलता रहे।"

◆बहाई एकेडमी, पंचगनी के निदेशक श्री नेसान आजादी और भोपाल से श्रीमती साधना मित्रा 22 जुलाई को संस्थान देखने आए। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों से बात की और

श्री नेसान आजादी व श्रीमती साधना मित्रा व संस्थान की निदेशिका

यहाँ पर होने वाले गतिविधियों को जाना। श्री आजादी ने कहा "जब आपके पास एक सुंदर सपना होता है तब आप सबकुछ अच्छा पाते हैं और सपने के अंत में अपने आप को काफी उत्साहित महसूस करते हैं। बरली देखने के बाद ऐसा ही महसूस हुआ। आपको ईश्वर का आर्शीवाद मिले।" श्रीमती मित्रा ने कहा,"इस स्थान पर हर जगह ईश्वर के होन का एहसास होता है। आपके प्रयास बहुत आर्शीवादित है।"

◆इंदौर के आयकर अधिकारी श्री एच.एन. मौर्या ने अपनी पत्नी के साथ 24 जुलाई को संस्थान देखने के बाद कहा

संस्थान के एकाउंटेंट श्री अजय तिवारी, आयकर अधिकारी श्री एच. एन. मौर्या व पत्नी श्रीमती मौर्या और डॉ. जनक पलटा मगिलिगन

"जहाँ आप सेवा दे रहें हैं, यह संस्थान ईश्वर द्वारा दिया गया उपहार है ।"

कार्यक्रमों में भागीदारी

●मध्यप्रदेश के उद्योग एवं व्यापार मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय के आमंत्रण पर भोपाल में 10 जुलाई को "खाद्य सुरक्षा पर नई चुनौतियां" विषय पर राज्यस्तरीय विर्मश आयोजित की गई। बैठक में मध्यप्रदेश के सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। संस्थान की निदेशिका भी विशेष रूप से आमंत्रित थीं। खाद्य (खाने पीने का सामान) सुरक्षा की बात करते हुए उन्होंने कहा, "पशुओं तथा आदिवासी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए सस्ते बीज और खाने का सामान उपलब्ध कराना चाहिए।"

●विश्व बंधुत्व आंदोलन के 16 जुलाई को 18 वें स्थापना दिवस समारोह में संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन व श्री जिम्मी मगिलिगन ने भाग लिया और इस कार्यक्रम की अध्यक्षा ने बरली संस्थान को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

●इंदौर के वरिष्ठ नागरिक फोरम द्वारा 16 जुलाई को आयोजित कार्यक्रम में "भारत की छवि बनाने में विदेशों में रहने वाले भारतीयों की भूमिका" में संस्थान की निदेशिका ने भाग लिया। मगिलिगन दम्पत्ती का कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के भूतपूर्व मंत्री श्री एड्यूरेडो फेलेरियो को परिचय देते हुए 'बरली संस्थान' को इंदौर का गौरव बताया।

•भगवती महिला मंडल, इंदौर के स्थापना दिवस पर 17 जुलाई को श्रीमती जनक मगिलिगन ने अपने विचार कुछ इस तरह रखे, "पंजाबी समाज में बढ़ती हुई दहेज प्रथा और लेन–देन जैसे रीति–रिवाजों को खत्म करने की जरूरत है। इस समाज में लड़के–लड़कियों का भेदभाव और भ्रूण हत्या बढ़ रही है। इन बुराईयों को लड़के के माता–पिता को आगे आकर रोकना होगा क्योंकि उनकी पहल से ही सामाजिक बुराईंयों का अंत हो सकता है।"

•देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के
पीठ द्वारा विश्वविद्यालय एवं मह
लिए 22 से 24 जुलाई तक तीन
आयोजन किया गया जिसका विष
और सामाजिक प्रगति"। इस द
निदेशिका ने भी भाग लिया।

•सेवा सुरभि संस्था द्वारा 25 जु

नेशनल ओपन स्कूल के परि

हम आपको सूचित कर रहें हैं कि
98वाँ प्रशिक्षण की प्रशिक्षणार्थिय

इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की कटाई और सिलाई की परीक्षा के परिणाम आ गए हैं। जो प्रशिक्षणार्थी परीक्षा में पास हो गए हैं उनके परिणाम नीचे दिए गए हैं:–

क्र.	नाम	अंक 200	क्र.	नाम	अंक 200
1.	हेमलता कनेल	134	27.	बिंदा	137
2.	सीमा बंडडिया	136	28.	झूना चौहान	133
3.	सुभद्रा	136	29.	सुनिता चौहान	131
4.	कमला सोलंकी	130	30	अनीता	143
5.	सुमन	137	31	मीना चौहान	130
6.	रमीला	131	32	सीमा आकडिया	124
7.	रजनी	141	33	मंजू डावर	150
8.	हिंगरी	128	34	बल्की	128
9.	संजू	136	35	अनीता मुझाल्दे	138
10.	सुनिता भँवर	132	36	जमदी	138
11.	शर्मिला	141	37	ममता सिसोदिया	132
12.	गंगा बर्डे	136	38	बारकी कनास्ता	131
13.	मेनका	140	39	पिंकी जमरा	138
14.	कोमल	123	40	सुनिता कवछे	133
15.	अनीता चौहान	133	41	मुन्नी बडोले	140
16.	रेखा भँवर	145	42	सुरमा	138
17.	अनीता वास्कले	154	43	रेखा विस्के	146
18.	सुनिता चौहान	142	44	गुरी चौगर	133
19.	रेशम	149	45	पिंकी जाधव	130
20.	गीता	145	46	पिंकी कनासिया	134
21.	सुरली दगोड़े	146	47	संगीता	140
22.	सुरमा लोहारिया	149	48	किरण तोमर	141
23.	रमा	150	49	दितु बाई	139
24.	जानकी	134	50	देवली डावर	146
25.	पिंकी बर्डे	144	51	माया डावर	136
26.	गना डावर	139	52	मेजल डावर	141

क्र.	नाम	अंक 200
1.	हेमलता कनेल	134
2.	सीमा बंडडिया	136
3.	सुभद्रा	136
4.	कमला सोलंकी	130
5.	सुमन	137
6.	रमीला	131
7.	रजनी	141
8.	हिंगरी	128
9.	संजू	136
10.	सुनिता भँवर	132
11.	शर्मिला	141
12.	गंगा बर्डे	136
13.	मेनका	140
14.	कोमल	123
15.	अनीता चौहान	133
16.	रेखा भँवर	145
17.	अनीता वास्कले	154
18.	सुनिता चौहान	142
19.	रेशम	149
20.	गीता	145
21.	सुरली दगोड़े	146
22.	सुरमा लोहारिया	149
23.	रमा	150
24.	जानकी	134
25.	पिंकी बर्डे	144
26.	गना डावर	139

क्र.	नाम	अंक
50	देवली डावर	146
51	माया डावर	136
52	मेजल डावर	141

प्रिंटेड मैटर–बु

पता

____

____

____

____

प्रकाशन में सहयोगी
व श्री जिम्मी मगिलिगन

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित   **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**